आपका बंटी के कथानक की समीक्षा

'आपका बंटी' की कथा का मुख्य आधार पति-पत्नी के तलाके के उपरान्त संतान के 'एडजेस्टमेन्ट' की समस्या है। यहाँ पारिवारिक विसंगतियों के शिकार माता-पिता की एकमात्र संतान केन्द्र में है। उसका मनोवैज्ञानिक और यथार्थवादी दृष्टिकोण से चित्रण किया गया है। माता-पिता के तलाक का कारण उनकी आपसी कुण्ठाएं, महत्वाकांक्षाएं एवं अहंभाव है। यह उनके दाम्पत्य जीवन को सहज नहीं रहने देता। इसकी परिणति तलाक में होती है। बंटी आरंभ से ही मम्मी के पास रहता है। तलाक के बाद भी वह मम्मी के साथ रहता है। वैसे वह पापा को भी प्यार करता है, लेकिन मम्मी के सानिद्ध के लिए पापा को भूलने का प्रयास करता है। इस प्रयास में वह मम्मी से भावनात्मक स्तर पर अधिक जुड़ता जाता है। हालांकि मम्मी अपने अहं की संतुष्टि और बंटी के सहज विकास के लिए डॉ. जोशी से दूसरा विवाह कर लेती है। इस विवाह का बंटी पर नाकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वह इस रिश्ते को सहज रूप से स्वीकार नहीं पाता। यहीं से बंटी सामान्य से असामान्य बालक बन जाता है। वह नये घर में डॉ. जोशी व उनके बच्चों के औपचारिक व्यवहार से अपने आप को उनके बीच उपेक्षित एवं फालतू मानने लगता है। वहाँ वह 'एडजेस्ट' नहीं हो पाता। फलतः वह हीनता बोध एवं अपराध बोध की ग्रंथी से पीड़ित हो जाता है। उसके विद्रोही एवं असहयोग पूर्ण व्यवहार से तंग आकर मम्मी उसे कलकत्ता अपने पहले पति अजय के पास भेज देती है। वहाँ भी वैसी ही परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इस तरह वह पापा के घर में भी 'एडजेस्ट' नहीं हो पाता। तब पापा उसे हॉस्टल भेज देते हैं। इस प्रकार बंटी स्नेह के अभाव में एक 'समस्या बालक' बन जाता है। इसके साथ ही उपन्यास का अन्त हो जाता है।

इन बिन्दुओं से गुजरते हुए कथानक गति प्राप्त करता है। वैसे कथानक का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया जाए तो यहां कथा कहना उपन्यासकार का ध्येय नहीं रहा है, बल्कि इन बिन्दुओं के माध्यम से 7-8 वर्ष के बालक के मनोजगत का अर्थात् उसके मानसिक उतार चढाव का अध्ययन करना रहा है। किस प्रकार एक संवेदनशील बालक अपनी मम्मी के सुख व सानिध्य के लिए अपने पापा के प्यार

को ठुकरा देता है? मम्मी के पुनर्विवाह का उसके मानस पर क्या प्रभाव पड़ता है? तथा उस विवाह को वह किस रूप में स्वीकार करता है? आदि। वास्तव में उपन्यास का लक्ष्य सन्तानवान माता-पिता के तलाक और पुनर्विवाह के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याएं उद्घाटित करना रहा है। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में बालक के मनोविकारों, मनोदशाओं प्रवृत्तियों आदि के अध्ययन को उपन्यास का कथ्य बनाया गया है।

आरंभ में उपन्यास के केन्द्र में शकुन लगती है, लेकिन जैसे कथानक आगे बढ़ता है तो उसके केन्द्र में बंटी आ जाता है। कथा शकुन से हटकर बंटी पर केन्द्रित होने लगती है। प्रारंभ में शकुन की समस्या प्रमुख लगती है लेकिन शकुन के डॉ. जोशी से विवाह के फैसले का प्रभाव बंटी पर पड़ता है तो कथा बंटी केन्द्रित हो जाती है। वैसे ध्यान से देखा जाए तो दोनों पात्र ही अन्योश्रित है एक की स्थिति का प्रभाव दूसरे पर पड़ता है। इसलिए गौण व प्रधान कथा का प्रश्न नहीं उठता।

कथानक का विस्तार सोलह परिच्छेदों में हुआ है जिनमें विभिन्न मनःस्थितियों के माध्यम से घटनाओं का नियोजन किया गया है। कथानक के विस्तार में ही बाह्य स्थितियों के भीतरी संदर्भ स्पष्ट होते जाते हैं। डॉ. मनोहर सहगल को कथानक के सोलहवें परिच्छेद पर आपत्ति है। उनको यह परिच्छेद अनावश्यक एवं अनपेक्षित लगता है। उपन्यास का अन्त पन्द्रहवे परिच्छेछ के अन्तिम वाक्य बस, दो नन्ही-नन्ही बाहें उन सबल बाहों के नीचे अनदेखे-अनजाने ही शायद मसल गई।' पर हो जाना चाहिए था। इसके लिए यह तर्क है कि यह वाक्य उपन्यास की समाप्ति वाक्य के रूप में बड़ा उपयुक्त था। उन्हें बंटी का समूचा स्वप्नलोक अनावश्यक एवं वंचना मात्र लगता है।

अगर उपन्यास में से बँटी के स्वप्न लोक को निकाल देते हैं तो उपन्यास की सार्थकता संदिग्ध रह जायेगी साथ ही उपन्यासकार का ध्येय भी। जो बंटी के स्वप्न लोक के माध्यम से ही उजागर होता है। वैसे भी मन्नू भण्डारी का लक्ष्य बंटी है, न की शकुन। एक बालक के संवेदनात्मक विकास में जितना उसके परिवेश का योगदान होता है उतना ही उसके स्वप्नलोक का भी, जहाँ वह विचरण करते हूए अपने भावलोक को विकसित करता है। जब बंटी अपने सवालों का समाधान मम्मी या फूफी से नहीं पाता तो वह उनका समाधान अपने स्वप्नलोक के आधार पर करता है। स्वप्नलोक एवं सवालों के माध्यम से उपन्यासकार ने बाल मनोविज्ञान का सूक्ष्म विश्लेषण किया है कि बालक जो देखने में छोटा लगता है लेकिन उसके मस्तिष्क में सवालों के ऐसे झंझावात उठते हैं अगर उनका समाधान नहीं किया जाए तो वे सवाल उसके मानसिक विकास को कितना विक्षिप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही अगर उपन्यास का अन्त पन्द्रहवें परिच्छेद पर ही करते हैं तो उपन्यासकार का ध्येय, जो उसने 'जन्मपत्री' शीर्षक में दिया है, अधूरा ही रह जाता है। इस कारण कथानक

का विस्तार पन्द्रहवें परिच्छेद से आगे किया गया है। आशय यह है कि सोलहवा परिच्छेद कथ्य की दृष्टि से ही नहीं, शिल्प की दृष्टि से भी अत्यन्त आवश्यक है।

कथानक में बंटी और शकुन कथा समानान्तर चलती है। शकुन के प्रत्येक कार्य का प्रभाव प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बंटी पर ही पड़ता है। वैसे भी दोनों का संबंध ही ऐसा है कि एक की स्थिति का प्रभाव दूसरे पर पड़ना स्वाभाविक है। बंटी का कार्य क्षेत्र मम्मी से ही प्रारंभ होकर उसी के आप-पास समाप्त होता है। इसीलिए मम्मी द्वारा उत्पन्न की गई परिस्थितियों में बंटी उलझता जाता है। इन परिस्थितियों का प्रभाव उस पर इतना अधिक पड़ता है कि वह भीतर ही भीतर टूटता जाता है। परिणामस्वरूप उसका मानसिक विकास अवरूद्ध हो जाता है। उसकी मानसिक स्थिति दर्शाने के लिए भी सोलहवे परिच्छेद की परिकल्पना की गई है। इसी परिच्छेद में वह मम्मी से कटकर पापा के साथ कलकत्ता आता है। कलकत्ता आने से पूर्व वह सोचता है कि वहाँ वह प्रतिदिन पापा के साथ घूमने जायेगा। रोज नये-नये खिलौने खरीदेगा। उस घर में वह और पापा होंगे। जो उसे बहुत प्यार करते हैं, लेकिन जब वह घर पहुंचता है तो वहाँ भी नई मम्मी और भाई को देखकर उसे डॉ. जोशी के घर एवं वहाँ की स्थितियों का स्मरण हो आता है। जहाँ अभि-जोत का एकाधिकार होता है। इसके साथ ही उन परिस्थितियों की तीक्षणता व कटुता यादकर वह धारणा बना लेता है कि यहां भी वैसी ही घटनाएं घटने वाली हैं। उसकी यह पूर्व धारणा उसके भीतर भय एवं द्वंद्व उत्पन्न करती हैं। फलतः वह कुछ भी सोचन-समझने में असमर्थ होता जाता है। उसकी इसी मनोवैज्ञानिक विक्षिप्तता को दर्शाने के लिए ही अन्तिम परिच्छेद की योजना की गई है। यह मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उपयुक्त और आवश्यक है कि इन असामान्य स्थिति में रहते हुए बंटी जैसे संवेदनशील बालक की परिणिति विक्षिप्त होना ही थी।

कथानक का विकास सहज गति से हुआ है। इसमें पात्रों की मानसिक द्वंद्वों, मनोभावों तथा मनः स्थिति का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त घटना सूत्रों की दृष्टि से भी पात्रों के अंतर्मन के संकल्प-विकल्प, द्वंद्वात्मक स्थितियों एवं कंठाओं को जितनी सूक्ष्मता और संवेदनशीलता से मुखर किया गया है। वह निःसंदेह बहुत सराहनीय है।

इस प्रकार अपने गठन में कथानक बिना अवान्तर कथाओं के सहज है। उसकी सारी जटिलता पात्रों के निर्वाह में है। 'आपका बंटी' समस्या केन्द्रित मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। ऐसे उपन्यास में प्रधान पात्र की मनोगति, कथा का स्वरूप नियत करती है, परन्तु चरित्र की अंतर्यात्रा कथा को स्वरूप प्रदान नहीं करती है। कथा पात्रों के भीतर से विकसित होकर चरित्र कथा बन जाती है जो जीवन के विस्तृत फलक को छोड़कर चरित्र के मानस में विचरण करती हुई नवीन भावलोक को खोलती है जिससे नवीन चरित्रों का निर्माण होता है।